P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजतंरगिणी परम्परा में महाकाव्यत्व

ज्योति जोशी
विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
एस.एस.जैन सुबोध गर्ल्स कॉलेज,
सांगानेर, जयपुर, भारत

सारांश

भारत मां के शीर्ष मुकुट में विद्यमान कल्हण, जैसे ऐतिहासिक, वामन, शकुंक, अभिनव गुप्त आनन्दवर्धन तथा क्षेमेन्द्र जैसे साहित्य–शक्तियों चन्द्राचार्य जैसे वैयाकरणों एवं नागार्जुन जैसे दार्शनिक रत्नों की जन्मस्थली कश्मीर शारदा का पावन मन्दिर रहा है। यहाँ एक ओर पत्थर के शिल्पी विभिन्न स्वामी, ईश, विहार एवं मठ बनाने में अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे तो भुवनाश्युऽय काव्य व औचित्य विचार चर्चा लिखने वाले कवि व काव्य शास्त्री अपनी वाणी को मुखरित करते हुए माँ शारदा की पूजा में नवीन–नवीन हवि प्रदान करते रहे। ऐसी ही हवि की परम्परा में बीते हुए कल को प्रत्यक्ष बनाने की स्पर्धा करने वालों कविगणों की धारावाहिक रचनाएं है– राजतरगिणियां। एक नहीं, दो नहीं, 4, 5 कवियों द्वारा एक ही शीर्षक में, एक ही धारा में बनायी गयी काव्य–सरितायें 400 वर्षों तक निरन्तर अपनी माँ शारदा के चरणों का प्रशासन करती रही। वाक्सुधा से राजरूपी पथिकों की दर्प–ग्लानि को हरती रही। उन्हें सुधा–पान कराकर अमर बनाती रही, अजर बनाती रही। सभी राजाओं को उनके कर्मों के अनुसार न्यायाधीश प्रदत्त दण्ड या हर्जाना देती रही।

मुख्य शब्द : महाकाव्यत्व, अन्वेषण, अनुसंधायक, शब्दार्थौ सहितौ, ध्वनिरिति, रमणयार्थ, नीतिशास्त्री, वक्रता, नैतिक शिक्षा, वाक्यम् रसात्कम्, ऐतिहासिकता।

प्रस्तावना

संस्कृत के ऐतिहासिक काव्यों में सर्वाधिक दीर्घकाल के इतिहास पर अपेक्षाकृत प्रामाणिक सूचना देने के कारण राजतरंगिणी का स्थान अग्रगण्य है। इसमें कश्मीर राज्य का इतिहास सुदूरवर्ती प्राचीन काल से लेकर कल्हण के अपने समय तक (1950 ई.) प्रस्तुत है।

कल्हण ने बहुत प्रयत्न से इतने लम्बे युग के विषय में सूचनाओं का संकलन करके उन्हें प्रस्तुत किया है।

धर्मार्थ काममोक्षाणामुपदेश समन्वितम्।
इतिवृतम् कथायुक्त मितिहास प्रचक्षते।।[1]

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के उपदेश से युक्त कथायुक्त प्राचीन वृतान्त इतिहास कहलाता है। जहाँ तक राजतंरगिणी का इतिहास की तुला पर तोलने का प्रश्न स्थान का चयन, उसके प्रागेतिहासिक काल का परिचय, आदि बातें उसके प्रागेतिहासिक इतिहास इन वर्णनों से मिलता है।[2]

महाभारत काल के इतिहास खण्ड में उसे गहन अन्वेषण की आवश्यकता पड़ी है, कुछ राजाओं को महाभारत, नीलमत पुराण आदि से लिया है। जहां कहीं भी कल्हण को स्थान खाली दिखायी दिया स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि यहां इन राजाओं का वृन्तान्त नहीं मिलता।[3] इतना ही नहीं कल्हण ने एक सच्चे ऐतिहासिक की भांति कालक्रम का भी ध्यान रखा हैं महाभारत कलियुग के 653 वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद में हुआ था।4

प्रायः संस्कृत–साहित्य के इतिहास में कल्हण के काव्य को ऐतिहासिक काव्य माना जाता है। डॉ. रामजी उपाध्याय ने लिखा है। ''कल्हण परिपक्व अनुसंधायक था। वह प्राचीन ऐतिहासिक परम्परा का शोध करके विशुद्ध एवं सच्चा इतिहास प्रस्तुत करना चाहता था। इस महान उपक्रम में उसे सफलता मिली है। शोधक के सभी गुण कल्हण में थे। निष्पक्ष दृष्टि, अविकल अध्ययन, परिभ्रमण एवं सार्वजनिक सुरूचि।[5] इन्होंने भारतीय इतिहास की अभिवन श्रृंखलाओं को सामने रखा है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजतरंगिणी महाकाव्य, भारतीय इतिहास का ऐसा ग्रन्थ है, जो महाकाव्यत्व की दृष्टि से और ऐतिहासिकता की दृष्टि से खरा उतरेगा। इसे भारत के इतिहास में नैतिक शिक्षा का साधन माना जाएगा और कवि कल्हण की नीतिशास्त्रीयता प्रकट होगी।

साहित्य वैशिष्ट्य

राजतंरगिणी काव्य हैं इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न परिभाषायें दी हैं भामह ने काव्य की परिभाषा दी हैं शब्दार्थौं सहितौ काव्यम्।6

आचार्य दण्डी ने इसी परिभाषा को ''शरीरं तावदिष्टार्थं व्यवच्छिन्ना पदावली''7 कहा है। दोनों आचार्यों की परिभाषा में शब्द एवं अर्थ को काव्य माना है किन्तु वे होने चाहिये एक दूसरे के अभिष्ट सम्पादक। इसी बात को साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ ने 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्।8 लक्षण मे समेटा हैं आनन्छवर्धन ने ''काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति'' कहा है। कुन्तक ने इस सम्बन्ध में अपनी एक अलग ही मान्यता खड़ी कर दी है–

शब्दार्थौं सहितौ वक्रकवि व्यापार शालिनी।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यम् तद्विदाह्लदाकारिणी।।

उनके अनुसार काव्यज्ञों को प्रसन्न करने वाले वक्रकवि व्यापार युक्त भली प्रकार से बन्ध में व्यवस्थित शब्दार्थ काव्य होता है।[9]

आचार्य मम्मट ने काव्य की परिभाषा देते हए लिखा है–

''तद्दोषौ शब्दार्थौं सगुणावलंकृति पुनः क्वापि''[10]

पण्डिराज जगन्नाथ ने रस गंगाधार में रमणयार्थं प्रतिपादक शब्दः काव्याम् कहा है।[11]

शब्द व अर्थ का समूह हैं इसमें गुण व अलंकार का प्रयोग होना चाहिये, रस ध्वनि, वक्रता ये सभी काव्य में होना आवश्यक है। इस तुलना पर राजतंरगिण को तोलने पर ये निश्चित रूप से काव्य सिद्ध होती है। कल्हण की भाषा प्रायः प्रसाद एवं माधुर्य गुण की प्रधानता मिलती है। उसके शब्द इतने स्वच्छ एवं सटीक है कि उनके अर्थ शीघ्र ही समझ में आ जाते है। अनुष्टुप जैसे छोटे से छन्द में अपनी बात स्पष्ट की है। वह स्वयं अपने काव्य का काव्य कहता है।

''नपश्येत्सर्वस वेद्यान्भावान्प्रतिभया यदि।
तदन्यदिव्यदृष्टित्वे किमिवज्ञापम् कवेः।।''

कल्हण ने अपना कर्तव्य इतिहासकार जैसा न रखते हुए कवि जैसा समझा हैं उनकी धारणा है कि कवि होकर इतिहासकार बना जा सकता हैं आर वही प्रतिभा एवं सूक्ष्म दृष्टि को रख संसार के सामने घटना चक्र को उपस्थित करने में समर्थ है।[12] इस के अन्तर्गत श्रृंगार, युद्ध प्रसंगों में कही वीर, कही रौद्र एवं कही भयानक इसका पर्याप्त चित्रण हुआ है। अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति, दृष्टान्त, दीपक आदि का चारों में ही बाहुल्येन प्रयोग हुआ है। जहां तक ध्वनि का प्रश्न हैं धैर्य एवं मार्ग की कठिनाई बताकर राज्य प्राप्ति की योग्यता, पृथ्वी को वाचाल कहना, लक्षणा का प्रयोग, वैताल शब्द के दोनों भाव होने से वक्रोक्ति मय हो जाता है।

राजतरंगिणी की परम्परा

इन सब विचारों से राजतरंगिणी को श्रव्य काव्य माना जाता है। सुनकर या पढ़कर इनके रस का आनन्द उठाया जा सकता हैं राजतंगिणी महाकाव्य हैं उसमें विभागों का नाम सर्ग नहीं तरंग है और सर्ग की भांति प्रत्येक तंरग में नवीन रचना प्रक्रिया है। कल्हण की राजतंगिणी में 8 तरंगे हैं। इसमें 7826 श्लोक है जो मुख्यतः अनुष्टुप छन्द में हैं प्रथम तरंग के आरम्भ में ही कल्हण ने कहा कि कश्मीर के आरम्भिक 52 शासकों का उल्लेख पहले की किसी वंशावली में नहीं है फिर भी नीलमत पुराण के आधार पर उन्होंने उनका उल्लेख किया है। द्वितीय तरंग में कश्मीर के बाहर का प्रतापादित्य राजा बनता है। उसके बाद से कश्मीर में आंतरिक कलह प्रारम्भ होता है। इस वंश में छज राजा होते हैं, अन्तिम राजा आर्यराज स्वेच्छा से सिंहासन छोड़कर तपस्या करते हुए जीवन त्याग देता हैं तृतीय तरंग में गोनन्दीय वंश का पुनः उद्धार होता है। इसमें मेघवाहन से लेकर बालादित्य तक 10 राजा शासन करते हैं। चतुर्थ तरंग में कर्कोट राजवंश का शासन वर्णित है। पंचम तरंग में उत्पलवंशीय राजाओं का ऐतिहासिक कालक्रम तिथि–सहित दिया गया है। षष्ट तरंग में यशस्कर (939–948 ई.) से लेकर राशी दिद्धा (980–1003 ई.) तक का वर्णन है। यशस्कर का काल शान्ति व्यवस्था से युक्त था किन्तु उसके बाद तीन राजा दुर्बल सिद्ध हुए। सप्तम तरंग में लोहरवंश के प्रायः एक सौ वर्षों के शासनकाल का वर्णन हैं (1003 ई.–1101 ई.) इस वंश में संग्राम राज (1003–1028 ई.), हरिराज (केवल 22 दिनों का राज्य) अनन्त (1028–63 ई.) , कलश (1063–89 ई.), उत्कर्ष (कारागार में मृत्यु) तथा हर्ष (1089–1101 ई.) में छह राजा हुए। अष्टमतरंग में कल्हण के अपने युग की घटनाएँ वर्णित हैं (1101–1150 ई.)। राजसिंहासन के लिए होने वाले संघर्ष और छल–प्रपञ्च की रोमांचकारी स लेकर जयसिंह (1128–59 ई.) तक के शासन का इसमें वर्णन है।

निष्कर्ष

इतना सब कुछ होते हुए कल्हण की राजतंरगिणी एक बहती धारा है कवि की वाणी अमृतरस का भी तिरस्कार करती हैं अमृत को केवल पीने वाला ही अमर होता है जबकि कवि की वाणी से स्वयं कवि तथा वर्णनीय पात्र दोनों अमर बन जाते हैं।

''वन्द्यःकोऽपि सुधास्यन्दास्कन्दी स सुकवेगुणः
येनयाति यशःकाये स्थैर्यं स्वरूप परस्य च।।[13]

तरंगे आकार में बड़ी होने के कारण किसी की तरंगिणी का आकार किसी महाकाव्य से कम नहीं है। राजतंरगिणी भारतीय साहित्य में एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसे भले ही काव्यात्मक रूप दिया गया हो किन्तु वह इतिहास की दृष्टि से लिखी गयी हैं। भारत के इतिहास को नैतिक शिक्षा का साधन माना गया है। कल्हण ने महाभारत के प्रभाव के कारण इस दिशा में भी राजतरंगिणी को मोड़ा है। इसमें उन राजाओं की कथाओ पर बल है जिनका अन्त अन्य कारणों से दुखमय हुआ है। इससे कल्हण का नीतिशास्त्री रूप प्रकट होता है।

शक्ति और सम्पत्ति की अस्थिरता, सारी कीर्तियों की क्षणिकता, पापियों को लोक–परलोक में मिलने वाला दण्ड इत्यादि नैतिक विषयों की उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करने में कवि की दृढ़ आस्था हैं
यथार्थ को आदर्श की कसौटी पर कसने का यह श्लाध्य प्रयास हैं अन्यथा शुष्क या नीरस इतिहास आग्राह्य होता।

कवि कल्पना, रस, अलंकार तथा भावों का सुन्दर समन्वय राजतरंगिणी की विशिष्टता है।

अंत टिप्पणी

1. *प्राचीन भारत–डॉ. पुरूषोत्तम लाल भार्गव, आमुख में उद्धृत।*
2. *कल्हण की राजतंगिणी 1:26 27 से 38*
3. *वही 1:83*
4. *कल्हण कृत राजतंरगिणी – 1 : 53*
5. *संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामजी उपाध्याय*
6. *भामह–काव्यालंकार*
7. *दण्डी–काव्यादर्श 1/10*
8. *वक्रोक्ति जीवितं– कुन्तक प्रथम*
9. *काव्यप्रकाश –मम्मटकृत*
10. *रसगंगाधर–पं. जगन्नाथ*
11. *संस्कृत साहित्य का इतिहास– चारूदवे शास्त्री पंचम परिच्छेद – पृ. 97*
12. *इस वंश के रणादित्य का शासन – काल कल्हणनं 300 वर्षों का माना है। यह विचित्र स्थिति है। इसलिए दस राजाओं का राज्यकाल 589 वर्ष कहा गया है।*
13. *राजतरंगिणी 1/3*